सद्भावना से ही संभव है सुरक्षित परिवहन

इंदौर। ट्रांसपोर्टरों के लिए आयोजित कार्यक्रम उद्घाटन करते हुए क्षेत्रीए संचालक ब्र.कु.ओम प्रकाश, प्रो.ई.वी.स्वामीनाथन, ब्र.कु.उषा बहन तथा अन्य।

इंदौर। ट्रांसपोर्ट का महत्व आदि काल से है। समय के साथ-साथ विज्ञान और टेक्नोलॉजी ने ट्रांसपोर्ट के नये-नये साधन उपलब्ध कराये हैं। जिसके कारण आज सारा विश्व एक ग्लोबल विलेज बन गया है।

उक्त उद्गार इंदौर जोन के क्षेत्रीए निदेशक ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई जी ने ज्ञान शिखर कॉम्पलेक्स, ओम शांति भवन में ''ट्रांसपोर्टरों'' के लिए आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि पहले मनुष्य की मुख्य आवश्यकता रोटी, कपड़ा और मकान थी लेकिन अब एक और मौलिक आवश्यकता जुड़ गई है वह है ट्रांसपोर्ट। व्यक्ति जब यात्रा करता है तो उसका जीवन चालक के हाथों में होता है, चालक की थोड़ी सी लापरवाही जीवन को जोखिम में डाल सकती है। इसलिए ट्रांसपोर्टरों का कर्त्तव्य है कि यात्रा को सुखद व सुरक्षित बनाए रखने के लिए चालक को अच्छा प्रशिक्षण दिया जाए। उसे जीवन के मूल्यों के प्रति जागृत किया जाये तो निश्चय ही हम सुरक्षित यात्रा कर पायेंगे।

मुम्बई के प्रो.ई.वी.स्वामीनाथन ने कहा कि यातायात एवं परिवहन जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। सुरक्षित परिवहन सभी चाहते है, लेकिन सद्भावना की कमी और स्वार्थगत प्राथमिकताओं के कारण मानव जीवन से खेलने की प्रवृति बहुत घातक है। सुखद परिवहन एवं यातायात के लिए इस व्यवसाय से संबद्ध लोगों को विशेष रुप से मानवीय गुणों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

मंच का कुशल संचालन ब्र.कु.ऊषा बहन ने किया और आभार व्यक्त ब्र.कु.अनिता बहन ने किया।

क्या आप किसी ट्रेन या बस में बैठेंगे, जिसके बारे में यह न जानते हो कि वह कहां जा रही है? हरगिज नहीं। लोग ऐसी ट्रेन या बस में तो नहीं बैठेंगे फिर वे जिंदगी के सफर में बिना लक्ष्य के चलने को क्यों तैयार हो जाते हैं?

व्यक्ति को जीवन में लक्ष्य अवश्य होना चाहिए लक्ष्य बनाना और हांसिल करना। लक्ष्य बनाने के बाद हमारी सारी शक्तियां उन्हें हांसिल करने की दिशा में लगानी होगी - जीवन के रास्तों पर चलते हुए अपनी आँखें अपने लक्ष्य पर जमाएं रहें। आम पर ध्यान दें, गुठली पर नहीं।

ज्ञान आपको मंजिल तक पहुंचाने में मदद करता है, बशर्ते कि आपको अपनी मंजिल का पता हो।

प्राचीन भारत में एक ऋषि अपने शिष्यों को तीरंदाजी की कला सिखा रहे थे। उन्होंने लक्ष्य के रूप में एक लकड़ी की चिड़िया रखी और अपने शिष्यों से उस चिड़िया की आँख पर निशाना लगाने को कहा। उन्होंने पहले शिष्य से पूछा, तुम्हें क्या दिख रहा है? शिष्य ने कहा, 'मैं पेड़, टहनियां, पत्ते, आकाश, चिड़िया और उसकी आँख देख रहा हूँ।'

ऋषि ने उस शिष्य को इंतजार करने को कहा। तब उन्होंने दूसरे शिष्य से वही सवाल किया, तो दूसरे शिष्य ने जवाब दिया, 'मुझे सिर्फ चिड़िया की आँख दिखाई दे रही है।' तब ऋषि ने कहा, बहुत अच्छा, अब तीर चलाओ। तीर सीधा जाकर चिड़िया की आँख में लगा।

अगर हम अपने मकसद पर ध्यान नहीं लगाएंगे तो अपने लक्ष्य को हासिल नहीं कर पायेंगे। अपने मकसद पर ध्यान लगाना एक मुश्किल काम है, मगर यह एक कला है, जिसे सीखा जा सकता है।

अपनी नजर लक्ष्य पर रखें:- 1952 में फ्लोरेंस चैडविक कैटलिना चैनल को तैरकर पार करने वाली महिला बनने वाली थी। वह इंग्लिश चैनल को पहले ही पार कर चूकी थी। सारी दुनिया की निगाहें उन पर टिकी थीं। चैडविक ने घने कोहरे, हड्डियों तक कंपकंपाने वाली ठंड और कई बार शार्क मछलियों का

मुकाबला किया। वह किनारे पर पहुंचने का प्रयास कर रही थी लेकिन उसने अपने चश्में से जब भी देखा, उसे घना कोहरा ही दिखाई दिया। किनारा न दिखाई देने की वजह से उसने हार मान ली। चैडविक को सदमा तब लगा, जब उसे पता चला कि वह किनारे से सिर्फ आधा मील दूर रह गई थी। उसने हार इसलिए नहीं मानी थी क्योंकि बाधाओं ने उसकी हिम्मत तोड़ दी थी बल्कि इसलिए मानी कि क्योंकि उसे अपना लक्ष्य कहीं नजर नहीं आ रहा था। वह किसी बाधा की वजह से नहीं रूकी। उसने कहा 'मैं बहाने नहीं बना रही हूँ, अगर मैंने किनारा देखा होता तो मैं जरूर कामयाब हो जाती।'

दो महिने बाद, वह फिर वापिस आई और उसने कैटलिना चैनल को पार कर लिया। इस बार खराब मौसम के बावजूद उसने अपने लक्ष्य पर निगाह रखी और वह न केवल सफल रही बल्कि उसने पुरुषों के रिकार्ड को भी दो घंटे के समय से तोड़े।

लक्ष्य क्यों आवश्यक है? - तेज धूप और शक्तिशाली मैगनीफाइंग ग्लास के बावजूद कागज को आग तब तक नहीं पकड़ सकती, जब तक आप ग्लास को हिलाते रहेंगे। अगर आप उसे थोड़ी देर स्थिरता से पकड़ कर प्रकाश को फोकस करेंगे, तो कागज आग पकड़ लेगा। ध्यान लगाने में ऐसी ताकत होती है।

एक बार एक यात्री एक चौराहे पर रूका। उसने एक बुजुर्ग से पूछा 'यह सड़क मुझे कहां जे जायेगी?' बुजुर्ग ने पलटकर पूछा, 'तुम कहां जाना चाहते हो?' उस यात्री ने कहा, 'मैं नहीं जानता।' बुजुर्ग ने कहा, 'तब कोई भी सड़क पकड़ लो। क्या फर्क पड़ेगा? कितनी सही बात है। जब आप जानते ही नहीं कि आपको कहां जाना है तो कोई भी सड़क तुम्हें वहां ले जायेगी।

मान लिजिए की आपकी फुटबॉल की टीम खेलने के लिए पूरे उत्साह के साथ तैयार है, तभी अचानक कोई गोल पोस्ट और गोल लाइन को हटा देता है। तब खेल का क्या होगा? अब वहां कुछ भी नहीं बचा। आप स्कोर कैसे रखेंगे? आप कैसे जानेंगे कि आप

शेष पृष्ठ संख्या 8 पर

उल्हासनगर। ब्रह्माकुमारीज़ प्रवेश द्वारा का उद्घाटन करते हुए यूएमसी के पूर्व अध्यक्ष लाल पंजाबी, विधायक कुमार अयलानी, मीना अयलानी, नीना नथानी, ब्र.कु.सोम बहन तथा अन्य।

इंदौर। दादी प्रकाशमणिजी की पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में श्रद्धांजली देते हुए ब्र.कु.हेनलता बहन तथा अन्य।

मुसाखेड़ी। महंत श्रीनारायण स्वामी को 'ईश्वरीय संदेश' देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुमित्रा बहन।

सुदामा नगर। अन्नपूर्णा थाने के पुलिस अधिकारियों को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में हैं ब्र.कु.दामिनी बहन तथा अन्य।

सिवनी। सप्त दिवसीय 'गीता प्रवचन माला' को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.गीता बहन तथा मंचासीन हैं सांई समिति के संगीता मालू, समाज सेवी सुनील अग्रवाल।

राजगढ़। 'सम्मान समारोह' का उद्घाटन करते हुए विधायक हेमराज कल्पोनी, राशिद जमील, ब्र.कु.मधु बहन तथा अन्य।

इंदौर। राजा रमन्ना प्रगत प्रोद्योगिकी केंद्र में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुम्बई के प्रो.ई.वी.स्वामीनाथन।